International Journal of Creative Research Thoughts
Volume 1, Issue.11, November 2013
ISSN:-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का स्वरूप

डॉ. राम किंकर पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय लाहिड़ी महाविद्यालय
(छत्तीसगढ़)

श्रीमती विनीता पाण्डेय
टी.जी.टी. हिन्दी केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1 रीवा (म.प्र.)

सार :

भाषा विचारों के आदान प्रदान का माध्यम होती है। भाषा जितनी सुबोध, सरल और सहज होगी, भाव सम्प्रेषण उतना ही सफल और सशक्त होगा। भारतीय भाषाओं की परम्परा, इतिहास और विकास क्रम में हिन्दी का वही स्थान एवं महत्व है जो पुरा काल में संस्कृत का था। वर्तमान में हिन्दी भाषा न केवल भारत में अपितु विदेशो में भी करोड़ों लोगों की संपर्क भाषा बनी हुई है। भारत की आबादी का तकरीबन आधा हिस्सा मूलतः हिन्दी भाषी है और वह आपसी विचार–विनिमय के लिये हिन्दी का ही प्रयोग करता है। दरअसल भाषा किसी देश के इतिहास का वह आईना होती है, जिसमें भविष्य भी देखा जा सकता है। हिन्दी भारतवर्ष का स्वाभिमान है और हिन्दी के विकास तथा प्रचार–प्रसार में वास्तविक रूप से भारत के भविष्य की झाँकी देखी जा सकती है। आज हिन्दी का स्वरूप वैश्विक या ग्लोबल हो चला है, वह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पकड़ मजबूत कर रही है साथ ही वह अपने स्वरूप को निरंतर माँज भी रही है।

प्रस्तावना :

भारतीय संविधान के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी गई हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया। सरकारी प्रयोजनों के लिए भारतीय अंको के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप को मान्यता प्रदान की गयी। साथ ही 1965 ई. तक अंग्रेजी भाषा का प्रावधान रखा गया। लेकिन बाद में संशोधन कर इसे आगे के लिए बढ़ा दिया गया। आज हिन्दी भारत के अलावा कई देशों में व्यवहृत हो रही है। दुनिया के कई छोटे बड़े देशों में प्रवासी भारतीयों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। दुनिया में अनेक देशों के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य में भारतीय मूल के नागरिकों और हिन्दी भाषा की उपस्थिति अब प्रभावी मानी जा रही है। इस बड़े फलक पर चहुँमुखी चुनौतियों

और प्रतियोगिताओं के बीच से उभर–उभरकर अब भारतीय मूल के अनगिनत प्रवासी अपनी उपस्थिति को सार्थक सिद्ध करते हुए हिन्दी भाषा को सृजन और अभिव्यक्ति का माध्यम बना रहे हैं।

विवेचना :

आज वैश्वीकरण, ग्लोबलाइजेशन या भूमण्डलीकरण का अर्थ है, विश्व में चारों ओर अर्थव्यवस्थाओं का बढ़ता हुआ एकीकरण। वास्तव में यह एक आर्थिक अवधारणा है जो आज एक सांस्कृतिक और बहुत कुछ अर्थों में भाषायी संस्कार से भी जुड़ चुकी है। वैश्वीकरण आधुनिक विश्व का वह स्तम्भ है जिस पर खड़े होकर दुनिया के हर समाज को देखा, समझा और महसूस किया जा सकता है। वैश्वीकरण आधुनिकता का वह मापदण्ड है जो किसी भी व्यक्ति समाज राष्ट्र को उसकी भौगोलिक सीमाओं से परे हटाकर एक समान धरातल उपलब्ध कराता है, जहाँ वह अपनी पहचान के साथ अपने स्थान को पुष्ट करता है। वैश्वीकरण के प्रवाह में आज कोई भी भाषा और साहित्य अछूता नहीं रह गया है, वह भी अपनी सरहदों को पारकर विश्व भर के पाठकों तक अपनी पहचान बना चुका है जिसमें दुनिया भर के प्रबुद्ध पाठक भी एक दूसरे से जुड़ सके हैं और साहित्य का वैश्विक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन संभव हो सका है।

हिन्दी भारतवर्ष की प्रमुख भाषा है। आंकड़े बताते हैं कि देश में हिन्दी को मातृभाषा के रूप में प्रयोग करने वाले भारतीयों का प्रतिशत लगभग 43 है। यह मातृभाषा के रूप में बोलने वालों का आंकड़ा है, यदि हम संपर्क और द्वितीय भाषा के रूप में प्रयोग करने वाले भारतीयों की संख्या भी इसमें जोड़ दें तो इसका प्रतिशत बहुत अधिक बढ़ जाता है। भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में बसने वाले लोगों की संपर्क भाषा हिन्दी है। उत्तर से दक्षिण में बसने वाले लोगों और दक्षिण से उत्तर पूर्व में बसने वाले लोगों की संपर्क भाषा भी हिन्दी ही है। हिन्दी के अतिरिक्त कोई और भाषा इस देश की संपर्क भाषा हो भी नहीं सकती है। इस संदर्भ में हम यह रेखांकित कर सकते हैं कि अंग्रेजी तो बिल्कुल भी देश की संपर्क भाषा नहीं बन सकती क्योंकि यह देश की जनसंख्या की एक प्रतिशत से भी कम लोगों की मातृभाषा है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गांधी जी ने इस स्थिति को पहचानते हुए ही कहा था कि – ''कांग्रेस अधिवेशन

की कार्यवाही केवल हिन्दी में होगी, क्योंकि संपूर्ण राष्ट्र तक यदि हमें कांग्रेस का संदेश पहुंचाना है तो यह केवल हिन्दी के माध्यम से ही संभव हो सकता है।''[1]

यदि हम वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी का प्रयोग करने वालों की स्थिति का अवलोकन करें तो पाते हैं कि वर्ष 1952 ई. में हिन्दी विश्व में पांचवें स्थान पर थी जबकि 1980 ई. के आस–पास वह चीनी और अंग्रेजी के बाद तीसरे स्थान पर आ गयी। वर्ष 1991 की जनगणना में हिन्दी को मातृभाषा घोषित करने वालों की संख्या के आधार पर पाया गया कि इसकी संख्या पूरे विश्व में अंग्रेजी भाषियों की संख्या से कहीं अधिक है। इसी सम्बंध में भाषाविद जंयती प्रसाद नौटियाल, जिन्होंने लगातार 20 वर्ष तक भारत और विश्व में भाषाओं सम्बन्धी विभिन्न अध्ययन प्रस्तुत किये हैं, का कहना है – ''विश्व में हिन्दी प्रयोग करने वालों की संख्या चीन से भी अधिक है और हिन्दी अब प्रथम स्थान पर है। उसने अंग्रेजी समेत विश्व की अन्य सभी भाषाओं को पीछे छोड़ दिया है।''[2]

हिन्दी के विकास और विस्तार की कहानी बड़ी रोचक और उतार–चढ़ाव से भरपूर है। मध्यकाल की शैरसेनी अपभ्रंश से विकसित पश्चिमी हिन्दी से निःसृत खड़ी बोली का विकास आधुनिक काल में हुआ। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिन्दी ने देश को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य किया। भारत के स्वाधीनता आंदोलन में पूरे देश को जोड़ने में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ''स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी और लोकभाषाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वाधीनता की बलिवेदी पर न्योछावर होने की लौ जो देशवासियों के भीतर जगाई गई, वह हिन्दी भाषा के माध्यम से ही जगाई गई थी। क्योंकि इस संग्राम में हर तबके, हर मजहब, हर भाषा और विभिन्न संस्कृतियों के जानने वाले लोग थे, जिनके मध्य संचार और व्यवहार का कार्य हिन्दी ही करती थी। स्वाधीनता संग्राम में सामान्य जन की भागीदारी महत्वपूर्ण रही है। विशिष्ट लोगों का कार्य दिशा–निर्देशन करना एवं उन्हें सही व गलत राह की पहचान कराना था। भारत में स्वाधीनता की जो लौ जलाई गयी, वह मात्र राजनैतिक स्वतंत्रता के लिए ही नहीं थी वरन् सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा के लिए भी प्रमुख थी। भारत में साहित्य, संस्कृति और हिन्दी एक दूसरे के पर्याय रहे हैं, ऐसा कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।''[3]

हिन्दी के विकास का श्रेय जितना हिन्दी भाषी क्षेत्रों के विद्वानों का रहा है उससे कम अहिंदी भाषी विद्वानों का नहीं रहा है। इन विद्वानों में से कईयों ने तो हिन्दी को देश की प्रमुख भाषा के रूप में स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

बहुत सारे अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के विद्वानों ने न केवल हिन्दी को अपनाया वरन् उन्होंने हिन्दी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित भी कराना चाहा और सभी जगह घूम–घूमकर हिन्दी का बिगुल बजाया साथ ही विदेशों में भी जाकर हिन्दी की पुरजोर वकालत की और अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में हिन्दी का परचम लहराया। इस सम्बंध में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का योगदान महत्वपूर्ण है। गुजराती भाषी महात्मा गाँधी ने कहा था – ''हिन्दी ही देश को एक सूत्र में बाँध सकती है। मुझे अंग्रेजी बोलने में शर्म आती है और मेरी दिली इच्छा है कि देश का हर नागरिक हिन्दी सीख ले व देश की हर भाषा देवनागरी में लिखी जाए'' गाँधी का मानना था कि हर भारतवासी को हिन्दी सीखना चाहिये और उसका व्यवहार करना चाहिये। ठीक इसी तरह मराठी भाषी लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने एक अवसर पर कहा था – ''हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी।'' स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, सुभाषचंद्र बोस, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, केशवचन्द्र सेन आदि अनेक अहिंदी भाषी विद्वानों ने हिन्दी भाषा का प्रबल समर्थन किया और हिन्दी को भारतवर्ष का भविष्य माना। स्वामी विवेकानंद ने तो सन् 1893 ई. में शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में 'पार्लियामेंट आफ रिलीजंस' में अपने भाषण की शुरूआत भाइयों और बहनों से करके सब को मंत्रमुग्ध कर दिया था। स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसा क्रांतिकारी ग्रंथ हिन्दी में रचकर हिन्दी को एक प्रतिष्ठा प्रदान की। कवि राजनेता और भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने जनता सरकार के तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिन्दी में पहला भाषण देकर इसके अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप और महत्व में अत्यंत वृद्धि की।

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को भारतीय संघ की राजभाषा घोषित किया। तब से लेकर अब तक हिन्दी के स्वरूप में उत्तरोत्तर विकास और परिवर्तन हुआ है। आज हिन्दी भी वैश्वीकरण की बयार से अछूती नहीं है। आज हम कह सकते हैं कि हिन्दी भाषा एक बार फिर नई चाल में ढल रही है। बीसवीं सदी के

अंतिम दशको एवं इक्कीसवीं सदी के पहले दशक में हिन्दी भाषा में जो परिवर्तन हुए हैं वे साधारण नहीं है। आज हिन्दी का स्वरूप ग्लोबल हो चला है। भाषा और व्याकरण में नए प्रयोग किये जा रहे हैं। साथ ही आज हिन्दी का महत्व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बढ़ रहा है। आज दुनिया की कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ भारतीय न हों। अप्रवासी भारतीय पूरे विश्व में फैले हुए हैं, यदि हम आंकड़ों पर गौर करें तो पाते हैं कि विश्व में फैले इन अप्रवासी भारतीयों की संख्या लगभग 2 करोड़ है जिनके मध्य हिन्दी का पर्याप्त प्रचार प्रसार है। ''आज हिन्दी भाषा का अध्ययन विश्व के अनेक देशों में प्राथमिक स्तर पर, माध्यमिक स्तर पर, तो कहीं विश्वविद्यालय स्तर पर हो रहा है। कहीं यह अपनी मातृभूमि भारत से जुड़े रहने का भावात्मक माध्यम लगता है तो कहीं इसका उद्देश्य आधुनिक भारत के अंतर्मन को समझना है। विश्व में हिन्दी शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए निजी संस्थाएँ, धार्मिक संस्थाएँ और सामाजिक संस्थाएं तो आगे आ ही रही हैं, सरकारी स्तर पर विद्यालय एवं विश्व विद्यालयों द्वारा भी हिन्दी शिक्षण का बखूबी संचालन किया जा रहा है। उच्च अध्ययन संस्थानों में भी अध्ययन–अध्यापन एवं अनुसंधान की अच्छी व्यवस्था है।''[4] इस सम्बंध में अमेरिकी विद्वान डॉ. शोमर का कहना है ''अमेरिका में ही 113 विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में हिन्दी अध्ययन की सुविधाएं उपलब्ध हैं, जिनमें से 13 तो शोध स्तर के केन्द्र बने हुए हैं। आँकड़े बताते हैं कि इस समय विश्व के 143 विश्व विद्यालयों में हिंदी शिक्षा की विविधि स्तरों पर व्यवस्था है।''[5]

आज दुनिया में लगभग 45 से अधिक देशों के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन–पाठन और शिक्षा जारी है। भारत के बाहर जिन देशों में हिन्दी का बोलने, लिखने–पढ़ने तथा अध्ययन और अध्यापन की दृष्टि से प्रयोग होता है, उनको अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से निम्न वर्गों में बांटा जा सकता है –

1. जहाँ भारतीय मूल के लोग अधिक संख्या में रहते हैं, जैसे–पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बंगलादेश, म्यामांर, श्रीलंका व मालदीव आदि।
2. भारतीय संस्कृति से प्रभावित दक्षिण पूर्वी एशियाई देश, जैसे इंडोनेशिया, मलेशिया, थाइलैंड, चीन, मंगोलिया, कोरिया तथा कनाडा।

3. जहाँ हिन्दी को विश्व की आधुनिक भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है, जैसे– अमेरिका, आस्ट्रेलिया, कनाडा और यूरोप के देश।
4. अरब तथा अन्य इस्लामी देश जैसे संयुक्त अरब अमीरात (दुबई), अफगानिस्तान, कतर, मिश्र, उजबेकिस्तान, कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान आदि।[6]

निश्चित रूप से आज हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी पहचान की मोहताज नहीं है वरन उसने विश्व परिदृश्य में एक नया मुकाम हासिल किया है। अमेरिका जो कि आज उन्नत टेक्नोलाजी, बेहतर शिक्षा, दूर संचार के क्षेत्र में दुनिया में अग्रणी है वहाँ भी हिन्दी भाषा का प्रयोग बढ़ा है और इसके प्रचार–प्रसार की पुरजोर वकालत की जा रही है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जार्ज बुश ने तो राष्ट्रीय सुरक्षा भाषा कार्यक्रम के तहत अपने देशवासियों से हिंदी, फारसी, अरबी, चीनी व रूसी भाषाएँ सीखने को कहा था। अमेरिका जो कि अपनी भाषा और पहचान को लेकर दुनिया में श्रेष्ठता का दावा करता है, हिन्दी सीखने में उसकी रूचि का प्रदर्शन निश्चित ही भारत के लिए गौरव की बात है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने स्पष्टतया घोषणा की कि ''हिन्दी ऐसी विदेशी भाषा है, जिसे 21वीं सदी में राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि के लिए अमेरिका के नागरिकों को सीखना चाहिए।''[7]

उपसंहार :

निः संदेह आज हिन्दी का फलक विस्तृत हुआ है। भारत के साथ–साथ आज हिन्दी विश्व भाषा बनने को तैयार है। आज हिन्दी में वह सामर्थ्य है जो पूरे देश को एक सूत्र में पिरोकर रख सकती है। आज हिंदी बाजार और व्यापार की प्रमुख भाषा बनकर उभरी है। हिन्दी आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने पैर जमाने में कामयाब हुई है। अब वह संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनने के लिए प्रयत्नशील है। हिन्दी के प्रचार–प्रसार और विकास में सभी भाषा–भाषियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वैश्विक फलक पर हिन्दी को स्थापित करने के लिए जहॉ एक ओर साहित्यकारों, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं ने इसकी पृष्ठभूमि तैयार की तो वहीं दूसरी तरफ हिन्दी फिल्मों, गीतों, विज्ञापनों, बाजार, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि ने इसे विस्तीर्ण किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. *विमलेश कांति वर्मा, फीजी में हिंदी स्वरूप और विकास पृ. 1–2, 2000*
2. *साहित्य अमृत, सितंबर 2010, पृ. 39*
3. *पूर्वोक्त, पृ. 38*

4. *पूर्वोक्त, पृ. 40*

5. *विमलेश कांति वर्मा, फीजी में हिंदी स्वरूप और विकास पृ. 1–2, 2000*

6. *राकेश शर्मा निशीथ, विदेशों में हिंदी का बढ़ता प्रभाव, अक्टूबर 2006, सृजनगाथा*

7. *कृष्ण कुमार यादव, भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी, साहित्य कुंज 17, जनवरी 2009*